# 17

# फटा हुआ बूट

**पाठ-प्रवेश**

*कभी-कभी ऐसा होता है कि बिना श्रम के ही बहुत-सा धन या संपत्ति प्राप्त हो जाती है किंतु ऐसी संपत्ति बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है, विलासी तथा आलसी बनाती है तथा अनुचित कार्य करवाती हैं। अतः बिना परिश्रम किए मिलने वाले धन का मूल्य हम नहीं समझ पाते। इस तरह से मिलने वाले धन से तो निर्धन होना ही उचित है।*

एलिया कचहरी में खाली बैठा रहता था। यह तब की बात है जब लोग कचहरी से दूर ही रहना पसंद करते थे। बड़े-से-बड़े वकीलों को भी छोटे-छोटे मुकदमों से संतुष्ट होना पड़ता था। एलिया को तो कोई भी मुकदमा नहीं मिलता था फिर भी वह प्रतिदिन कचहरी जाता और वहाँ एकांत में बैठकर अपनी पत्नी को संबोधित करके कविताएँ लिखा करता।

एक दिन रास्ते में एक परिचित गाड़ीवान ने एलिया को रोकते हुए बताया, "मैं अभी-अभी तेर्सनोवा से आ रहा हूँ, वहाँ मैं तुम्हारे चाचा से मिला था। वे सख्त बीमार हैं।" एलिया जब शाम को घर पहुँचा तो उसकी पत्नी घर के सामने धूप में खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। एलिया ने जब चाचा की बीमारी की खबर उसे सुनाई तो उसके शांत-गंभीर चेहरे पर बेचैनी की बजाय रहस्यमयी मुसकराहट दौड़ गई। उसे देखकर एलिया भी मुसकरा दिया। "तो मैं जाता हूँ," एलिया ने कहा। आगे उसने कुछ नहीं कहा। पत्नी उसके मन की बात समझ गई। चाचा मरने पर अपनी सारी संपत्ति उसे दे जाने वाला था। तभी उसने पति के फटे हुए बूट की ओर देखते हुए पूछा, "रास्ते के खर्चे का भी कुछ प्रबंध है?"

"इसकी चिंता न करो। मेरे पास थोड़े-से पैसे हैं।" एलिया अपने चाचा के शहर के लिए रवाना हो गया। रास्ते में वह तेज़ी से चलता हुआ अपने फटे बूट के बारे में सोच रहा था कि वह उसे किसी-न-किसी तरह चाचा के घर तक

**शब्दार्थ**

**कचहरी**—अदालत; **मुकदमा**—मामला; **प्रतीक्षा**—इंतजार; **बूट**—जूता



Scanned with CamScanner

पहुँचा दे तो बहुत अच्छा हो। रात हुई तो ठंड बढ़ने लगी। एलिया को लगा कि उसके पाँव ठंड को जैसे छूने लगे हों। उसने अपने खस्ता बूट की तरफ़ देखा, जो अब मरम्मत करने के लायक भी नहीं रह गया था। उसे पहनकर चलने में बड़ी तकलीफ़ हो रही थी। फिर यह खयाल भी तकलीफ़ दे रहा था कि ऐसा बूट पहनकर चाचा के घर में जाना बेइज्ज़ती वाली बात होगी लेकिन कोई चारा नहीं था। तब वह बूट की ओर से ध्यान हटाकर चाचा की संपत्ति पाने और भविष्य में सुखी जीवन बिताने के बारे में सोचने लगा।

एक गाँव आने पर रात बिताने के लिए वह एक धर्मशाला में रुक गया। कम किराए में उसे एक गंदी, छोटी-सी कोठरी मिली। वहाँ दो व्यक्ति पहले से ठहरे हुए थे। वे दोनों ही सोए हुए थे। एलिया अपने उन्हीं कपड़ों में लेट गया लेकिन नींद न आई। उसको अपने खयालों में सभी सड़कों पर और सभी घरों में अनगिनत बूट दिखाई देने लगे, फिर तो जैसे उसे हर जगह बूट-ही-बूट दिखाई देने लगा। आखिर उसे लगा कि जैसे उस कोठरी में भी बूट बिखरे पड़े हों। तभी वह अचानक उठ बैठा और सर्दी से काँपता हुआ नंगे पाँव बड़ी नरमी से चलता हुआ अपने बगल-वाले मुसाफ़िर की खटिया के पास गया। उसका एक बूट उसने पहना ही था कि उसके तपते हुए पाँव में कोई चीज़ चुभी। उसने बूट उतार डाला, तभी कोठरी के बाहर से उसे अस्पष्ट-सी आवाज़ सुनाई दी तो डर के मारे उसके पाँव वहीं-के-वहीं जम गए। और उसी समय उसने अपनी आत्मा की फ़टकार सुनी कि वह पतन के रास्ते पर जा रहा है। बाहर की आवाज़ जब बंद हो गई तो वह कोठरी में से निकला। वहाँ कोई नहीं था। एक तरफ़ लटकी हुई लालटेन मद्धिम-सी रोशनी फैला रही थी। एलिया ने इधर-उधर देखा तो पास ही बूटों का एक जोड़ा दिखाई दिया। उसी समय उसने बिना कुछ सोचे एक बूट उठाकर अपने कोट में छिपा लिया। फिर एक नज़र वहाँ सोए पड़े चौकीदार की तरफ़ देखकर चुपके से फ़ाटक खोलकर वह बाहर निकल गया। लगभग आधा घंटा नंगे पाँव चलने के बाद उसे बूट पहनने का खयाल आया। एक पत्थर पर बैठकर वह बूट को कुछ क्षण देखता रहा। आखिर जब वह बूट पहनकर खड़ा हुआ तो उसके अंदर से आवाज़ आई, 'पतन! घोर पतन!' लेकिन आवाज़ की तनिक भी परवाह किए बिना वह चल पड़ा, अब वह पहले की तरह तेज़ी से नहीं चल रहा था। उसके कदम लड़खड़ा रहे थे और वह बार-बार पीछे मुड़कर देखता था कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है।

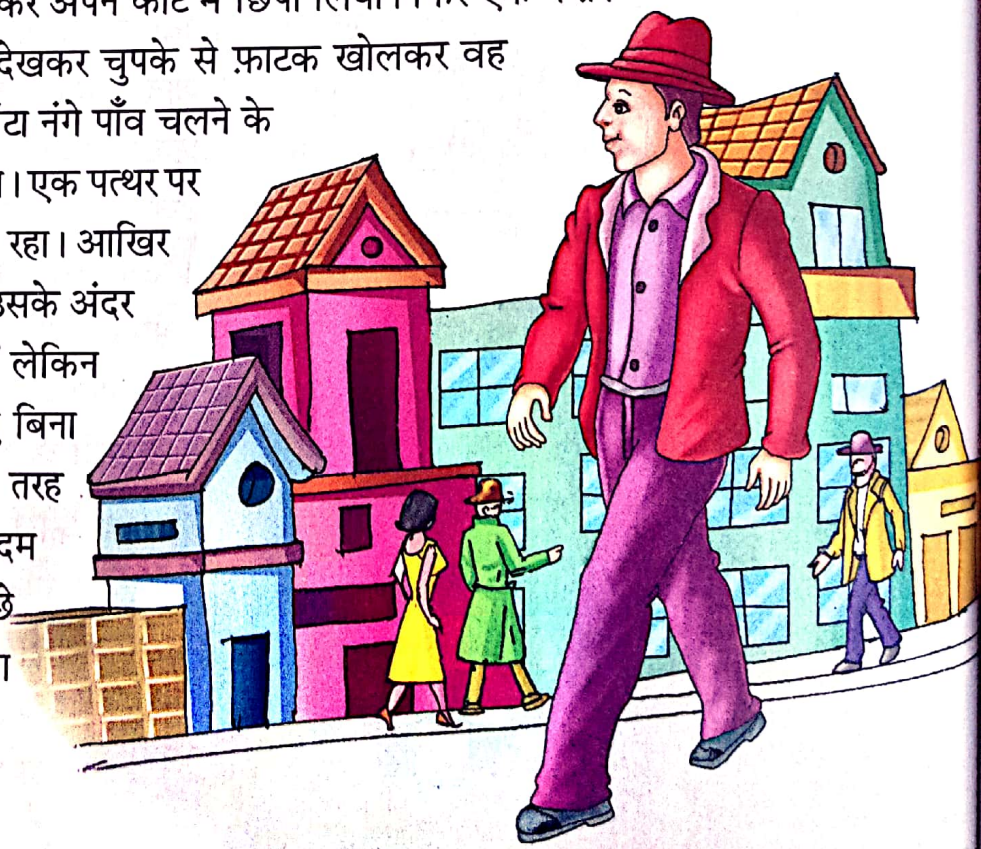

**शब्दार्थ**

**अस्पष्ट**—जो साफ़ न हो; **पतन**—गिरना; **मद्धिम**—धीमी/हलकी



Scanned with CamScanner

प्रात:काल का प्रकाश फैलने लगा तो एलिया का डर और बढ़ गया। उसके दिमाग में विचारों ने हलचल मचा दी। उसे लग रहा था कि राह चलते लोग उसकी चोरी भाँप लेंगे और फिर उसके चोर होने की खबर चारों ओर फैल जाएगी। आखिर पकड़े जाने के डर से उसने फिर अपना बूट पहन लिया और चुराया हुआ बूट सड़क के एक तरफ़ फेंक दिया तो भी उसका मन शांत न हुआ। रात की घटना रह-रहकर उसके सामने आने लगी। उसे बार-बार लग रहा था कि उस कोठरी के दोनों मुसाफ़िर उसके पीछे आ रहे होंगे। फिर इस खयाल से उसका दिल काँप उठा कि उसके चोर होने की खबर उसकी पत्नी तक पहुँच गई तो अनर्थ हो जाएगा। संपत्ति पाने के पहले ही वह किस अध:पतन को पहुँच गया है। चलते-चलते वह रुक गया और फिर लौट पड़ा। उसका फेंका हुआ बूट वहीं पड़ा था। उसे देखते हुए उसके मन में हलचल होने लगी। अगर वह उसे छिपा दे या ज़मीन में गाड़ दे तो भी वह चोरी उसकी आत्मा से छिपी तो नहीं रहेगी और वह चोरी उसके पूरे जीवन को कलंकित करती रहेगी...। अचानक उसने बूट उठाया और धर्मशाला की ओर चल पड़ा। वह धीरे-धीरे चल रहा था ताकि अँधेरा होने पर धर्मशाला में पहुँचे। दिनभर उसने कुछ नहीं खाया था और वह बहुत थकान महसूस कर रहा था। उसके कदम डगमगा रहे थे। धर्मशाला में खामोशी थी। उसने रात काटने के लिए जगह ली। फिर मौका पाकर वह बूट वहीं रख दिया, जहाँ से उठाया था और अपनी खटिया पर जाकर लेट गया। लेटते ही वह नींद में डूब गया। सुबह उठने पर उसने बचे-खुचे पैसों से डबलरोटी खरीदी और वहाँ से चल दिया। बड़ा सुहाना मौसम था। एलिया अपना फटा हुआ बूट पहने स्वस्थ मन से चला जा रहा था। आखिर जब वह अपने चाचा के घर पहुँचा तो पता लगा कि कुछ ही घंटे पहले उनका देहांत हो गया। नौकरानी ने उसे बताया, "मालिक ने आपका बहुत रास्ता देखा। तीन दिन पहले उन्होंने आपको तार भी भेजा था। वे कहा करते थे कि आप अकेले ही उनके वारिस हैं लेकिन आपने उन्हें भुला दिया है। वे आपसे बहुत नाराज़ थे। जब आज सुबह भी आप नहीं आए तो उन्होंने अपनी सारी दौलत मछेरों के अनाथ बच्चों को दे दी।" एलिया लौटकर अपने घर आया। उसकी पत्नी ने सारा हाल सुनकर कहा, "अच्छा ही हुआ, जो वह संपत्ति हमें नहीं मिली। जिस संपत्ति के मिलने से पहले ही आदमी अपनी ईमानदारी खो बैठे, उसका न मिलना ही अच्छा है।"

*-ग्रेज़िया डेलेडा*

**शब्दार्थ**

**अनर्थ**—जो नहीं होना चाहिए; **अध:पतन**—नीचे गिरना; **वारिस**—उत्तराधिकारी



Scanned with CamScanner